।। अथ मूळ प्राण उत्पत को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ मूळ प्राण उत्पत ग्रंथ लिखन्ते ||

|| कवत्त ||

एक समय धर्म रायजी || बैठा पलक लगाय ||
मनछा देवी गेब सूं || करमे पीव उपाय ||
धर्म राय मन सोचियो || अब प्रसण हे पीव ||
प्रसादी मो कूं दई || सिष जुगे जुग जीव ||
प्रसादी पाया पछे || कै जुग बीता जाण ||
जन सुखिया तब धर्म कूं || गेब वाज हुई आण || १ ||

एक समय धर्मराय ध्यान लगाकर बैठे हुये थे । परमात्मा ने मंछादेवी को गेबऊ धर्मराय के हाथ में प्रगट करी । तब धर्मराय ने मन में सोचा की परमात्मा मेरे पर प्रसन्न है और युगो युगो तक जिवीत रहनेकी प्रसादी दे रहे है । प्रसादी मिलने के बाद कई युग बीत गये तब धर्मराय को आकाशवाणी सुनाई दी । ||१||

एक समे धर्म राय || पलक सुं पलक लगाई ||
मनछा देवी पीव || गेब सूं पास पढाई ||
धर्मराय मन हरक || पीव किरपा सिर कीवी ||
जुगे जुग की आस || मोय प्रसादी दीवी ||
बोत जुग परले गया || बोत जुग जां होय ||
जन सुखिया तब धर्म कूं || साहेब पूछा जोय || २ ||

एक समय धर्मराय ध्यान लगाकर बैठे थे । परमात्मा ने इच्छाशक्ती को गेबऊ भेजा, धर्मराय को मन में प्रसन्नता हुई की परमात्मा ने मेरे उपर कृपा की है । युगो युगो से मैं आशा लगाये बैठा था वह प्रसादी मुझे दी है । इसके बाद कई युग आगे बीत गये और अब भी बहुत युग बीत रहे है तब धर्मराय को परमात्मा ने पुछा । ||२||

अलख निरंजन देव || गेब मुख बोले बाणी ||
मनछा देवी सूंप || धर्म सूं कह बखाणी ||
हम सूंपी तम चीज || नाय तुम काहा बणायो ||
धर्म कह कर जोड़ || पीव प्रसाद जूं पायो ||
ज्याँ डाकी विक्राळ || ब्रम्ह ले उबाज सुणाई ||
जन सुखिया तब धर्म || कह किम भुग तुं जाई || ३ ||

अलख निरंजन निराकार ब्रम्ह आकाशवाणी द्वारा धर्मराय से बोले की हमने इच्छा शक्ती को तुमको सौंपी थी,उस इच्छा शक्ती से तुमने कुछ नही बनाया, धर्मराय ने हाथ जोड्कर कहा की मुझे तो परमात्मा की तरफ से प्रसाद मिला है । तब फिर निरंजन निराकार ब्रम्ह आकाशवाणी द्वारा तेज बोले की इच्छा शक्ती को साथ लेकर उत्पती करो । आदि

सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की, तब धर्मराज ने कहा की मैं इसका उपयोग कैसे करु ।।।३।।

धर्म राज कर जोड़ ।। पीव सुं अर्ज सुणावे ।।
हर बोल्या सो बेण ।। पीव खाली नहि जावे ।।
किस बिध भुगतु जाय ।। सोच मन माय उपायो ।।
हर किरपा कर भेव ।। धर्म कूं आण सुणायो ।।
तिरगुण कर पैदास ।। जीव बोहो भाँत उपावो ।।
जन सुखिया घड़ मांड ।। उलट भांडा तुम खावो ।। ४ ।।

धर्मराज ने निरंजन निराकार ब्रम्ह से हाथ जोड्कर प्रार्थना की आपका आज्ञा मुझे स्विकार है परंतु मैं इच्छा शक्ती का उपयोग कैसे करु,यह मेरी समज मे नही आ रहा है । निरंजन निराकार ब्रम्ह ने कृपा कर धर्मराज को यह भेद आकाशवाणी द्वारा सुनाया की तीन गुण याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को पैदा कर कई प्रकार के जीवों की उत्पती करो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,संसार की रचना कर तुम उसका भांड खाओ याने सुख लेओ । ।।४।।

भुगतो जाय सराप ।। बेण साचो कर ल्यावो ।।
होय उजियागर भुगत ।। फेर पाछा तुम आवो ।।
धरम कह मुख बेण ।। मोय बळ नाय गुसांई ।।
तिरगुण किम प्रकास ।। करणगत कहिये सांई ।।
सायब गेब अवाज ।। धर्म कूं भेव सुणायो ।।
जन सुखिया इतबार ।। धर्म कूं तोय न आयो ।। ५ ।।

या तो उपरोक्त प्रकार से उत्पती करो अन्यथा श्राप भोगो । मेरे वचनो को सच्चा करो और मेरे कहे माफिक कार्य कर के वापिस आवो । धर्मराज ने मुंह से बोलकर प्रार्थना की हे नाथ मेरे में यह शक्ति नही है । ब्रम्हा,विष्णु,महेश इन तीनो गुणो को कैसे पैदा करु,यह समझाइये । तब परमात्मा ने धर्मराज को आकाशवाणी द्वारा त्रिगुणो को उपजाने का भेद सुनाया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इस पर भी धर्मराय को विश्वास नही हुआ । ।।५।।

सेंस पांख को कंवळ ।। ताय मे अेक बताई ।।
धर्म राय व्हा लीन ।। ओर सब कह पलाई ।।
निर्बळ बळ तज जाय ।। तोड पासे जब लीवी ।।
सायब अंतर आय ।। धरम पर किरपा कीवी ।।
ओऊँ शब्द उचार ।। धर्म बोल्या इण बाणी ।।
जन सुखिया तब सगत ।। गरभ मे कह बखाणी ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की हजार पांख के कंवल में एक शब्द बताया । धर्मराय उसमें लीन हो गया और सब कह बताया । जब अपने बल को छोड्कर निर्बल हो गया तब धर्मराय के अंतर में शब्द की जागृती की कृपा करी । ओअम शब्द का विचार कर धर्मराय बोले तब शक्ति ने छिप्पे तौर पर यह कहा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।६।।

ओऊँ शब्द प्रकास ।। सगत कूं पास बुलाई ।।
तुम हम अेकई होय ।। मांड की करां उपाई ।।
इत उत शब्द प्रकास ।। बिच अेक पुरष उपाया ।।
ता लेणे के काज ।। ऊठ दोनु तछ धाया ।।
बोल्यो सिसु ले ताण ।। हात समसेर संभाई ।।
जन सुखिया केहे बेण ।। तुम संग चलूं न भाई ।। ७ ।।

ओअम शब्द का प्रकाश हुआ जब शक्ति को पास बुलाया और कहा तुम हम दोनो साथ मिलकर संसार रचना का उपाय करे । इधर उधर शब्द का प्रकाश हुआ तब बिच में एक पुरुष पैदा किया,उसको लेने के लिये दोनो उठ्कर दौडे तब पैदा होनेवाले बालक ने हाथ में तलवार लेकर जोर से कहा की मैं तुम्हारे साथ नही चलुंगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।७।।

गाड करे बोहो भांत ।। संक माने नहि काई ।।
तब सोचो मन माय ।। बुध या अकल उठाई ।।
कर बिच सायब ध्यान ।। नार को अंग बणायो ।।
बदले दीवी जाय ।। आप तब ठोड़ रहायो ।।
करी लाज बोहो भांत ।। आण गुंगट सो ताणे ।।
जन सुखिया वा नर ।। इण्ड को मरम बखाणे ।। ८ ।।

बहुत उपाय करने पर भी उस बालक ने शंका नही मानी । तन मन मैं सोचकर बुद्धि एवम् अकल से विचार किया तथा परमात्मा का ध्यान कर हाथ के बीच में स्त्री का शरीर बनाया । जब स्त्री को उसे ले जाकर दी तब वह एक जगह ठहरा । उस स्त्री ने बहुत भांती से लज्जा करी व घुंघट निकाल लिया और उस स्त्री ने इंड के मर्म का बखाण किया ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।८।।

करम धाह बो उपाय ।। बेण सो केहे सुणावे ।।
सुध बुध करे बखाण ।। पीव सरणागत जावे ।।
च्यारू फेर मिलाय ।। रीज पुरीले जईये ।।
सुध बुध कह बिचार ।। सब श्रेष्ट तुम रहिये ।।
चली मध मन ध्याय ।। जिनस सु आण बताई ।।

जन सुखिया तब मन ।। गुसाई ये बोत सराई ।। ९ ।।

करमो के नाश होने का उपाय बचनो द्वारा कह कर सुणाया । सुध बुध से बखाण कर परमात्मा की शरण में गये । ब्रम्हा,विष्णु,महादेव व शक्ति को पुन: मिलाकर खुशी से पुरी में ले जावो । सुध बुध से विचार कर कहा की तुम सब अच्छे रहो । अपने मन से ध्यान कर चला और चीज को आकर बताई । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मन से परमात्मा ने बहुत अच्छा बताया । ।।९।।

अंड कियो प्रकास ।। चहुँ दिस दिसा बधाई ।।
चोड़ो क्रोड़ पचास ।। कोस जो जन ठेराई ।।
ता मध बिस्न प्रकास ।। नाभ मे कंवळ चलायो ।।
ब्रम्हा उत्पत जाण ।। पोप डंडी हुये आयो ।।
धायो बोहो प्रकार ।। गेल को छेह न आवे ।।
ब्रम्हा तब सुखराम ।। उलट पाछो फिर धावे ।। १० ।।

अंड ने चारो दिशा में अपना प्रकाश फैलाया वह प्रकाश पचास क्रोड जोजन तक फैला हुआ था । उस प्रकाश में विष्णु प्रकट हुआ व विष्णु की नाभी से कंवल चला,ब्रम्हा की उत्पती कमल की डंडी में हुई,ब्रम्हा कमल की डंडी में उपर चला,परंतु डंडी का थाह नही आया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ब्रम्हा तब पीछे फिर गया । ।।१०।।

पाछो दोडयो बोहोत ।। छेह कहुँ पार न आवे ।।
ब्रम्हा कंपे सरीर ।। मन धिरप नहि खावे ।।
गेब वाज ता होय ।। भेद तां मांय सुणाया ।।
ध्यान बिध सिखाय ।। पीव देखण मे आया ।।
जब मन आई धीर ।। शिष्ट सब माय दिखावे ।।
ब्रम्हा तब सुखराम ।। समज ऊँचा चल आवे ।। ११ ।।

ब्रम्हा पीछे बहुत चला परंतु कोई पार नही आया तब ब्रम्हाका शरीर कापने लगा व मन में धैर्य नही रहा । तब आकाशवाणी द्वारा भेद बताया व ध्यान करनेकी विधी सिखाई तब ध्यान में परमात्मा के दर्शन हुए,तब ब्रम्हा के मन को धैर्य हुआ तो कंवल की डंडी में सारा संसार दिखने लगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ब्रम्हा तब ऊंचे चल आया । ।।११।।

ब्रम्हा सोच बिचार ।। शिष्ट मन सोबा कीया ।।
तब भृगुटी प्रकास ।। सिवले दर्शण दीया ।।
सगत किया प्रकास ।। बिस्न कूं उवाज सुणाई ।।
परणो मो कुं आप ।। पास मे रहुँ लुगाई ।।

बिस्न सुणत कर जोड़ ।। सगत को बेण सुणायो ।।
जननी कह सुखराम ।। बिस्न सरणागत आयो ।। १२ ।।

ब्रम्हा ने सोच विचार कर सृष्टी रचने का मन में विचार किया,तब भृगुटी के प्रकाश में शिव प्रगट हुआ,अब शक्ति ने प्रकाश किया तो विष्णु को यह आवाज सुनाई दी की आकर मेरे से ब्याह करो । मैं तुम्हारी स्त्री बनकर रहुंगी,तब विष्णु ने हाथ जोड्कर शक्ति से कहा की आप मेरी माता है और मैं आपकी शरण में हुं । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,यह बात कही । ।।१२।।

कियो भस्म तिण बार ।। जाय ब्रम्हा कूं लीया ।।
परणो मुज कूं आय ।। राज सब तुम कूं दीया ।।
ब्रम्हा सोच मन मांय ।। बेण सो कह सुणाई ।।
तुम माता मे पूत ।। परण केसी बिध आई ।।
जब नटियो तिण बार ।। बिस्न ब्रम्हा कूं मेल्या ।।
सिव पे आय धाय ।। परण संग रह स भेळा ।। १३ ।।

तब शक्ति ने विष्णु को मिटा दिया और ब्रम्हा के पास जाकर बोली की मेरे से ब्याह करो,यह सब राज तुमको देती हुं । ब्रम्हा ने सोच विचार कर शक्ति से कहा की आप मेरी माता हो,आपका पुत्र हुं मैं विवाह कैसे कर सकता हुं । जब ब्रम्हा ने ब्याह करनेसे ना कर दी तब ब्रम्हा को भी विष्णु की तरह मिटा दिया व शिव के पास आकर बोली मेरे साथ ब्याह करो,आप और हम दोनो साथ रहेंगे । ।।१३।।

शिव सोचो मन माय ।। बिस्न ब्रम्हा सा लीया ।।
मै नटियो तिण बार ।। मोय कुई चूरण कीया ।।
तां मे क्या सुख होय ।। धुंध सूं अकळ उठाई ।।
परणुं गो मै आय ।। बचन बाचा द्यो आई ।।
मेरा बचन निभाय ।। बेण खाली नहि जावे ।।
जन सुखिया कर जतन ।। सब परणे कूं आवे ।। १४ ।।

शिव ने मन में सोचा की शक्ति ने ब्रम्हा विष्णु को मिटा दिया । मैं इनकार करुंगा तो मुझे भी मिटा देगी,इसमें क्या सुख मिलेगा । अपनी बुध्दी से अकल खडी की,मैं तुम्हारे से ब्याह जरुर करुंगा । तुम मुझे वचन दो की मैं तुम्हारे वचन को निभाउंगी व तुम्हारी आज्ञा खाली नही जायेगी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,शिव ने कहा ऐसा प्रयत्न कर सब ही ब्याह कर लेवे, शक्ति से कहा । ।।१४।।

केहे मुख बचन उचार ।। बेण तेरा सब मानुं ।।
सिव कूं सगत सराय ।। मर्द तोहि कूं जानुं ।।
सिव कह बचन उचार ।। बप दूजो तम धारो ।।

ब्रम्हा बिसन उपाय ।। शिष्ट को करो पसारो ।।
दोन्यु कर पैदास ।। रूप दूजो धर आई ।।
जन सुखिया सिव ऊठ ।। पल्लो गेबाय संभाई ।। १५ ।।

शक्ति ने शिव से कहा मैं तुम्हारे सब वचनो को मानूंगी और तुम्हे सब से बलवान मर्द समझूंगी । शिव ने शक्ति से कहा तुम दुसरा शरीर धारण करो और ब्रम्हा,विष्णु को प्रगट कर सृष्टि पैदा हो वैसा ऊपाय करो,तब ब्रम्हा,विष्णु को प्रगट कर दुसरा शरीर धारण कर लिया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,तब शिव ने उठकर शक्ति की बांह पकड ली । ।।१५।।

खेंच चल्या सिव धाय ।। सगत लारे सिर आवे ।।
आप अढळ उण जाग ।। बिस्न कूं पास बुलावे ।।
ब्रम्हा के संग होय ।। बिस्न के संग पठाई ।।
आप रहे मेजूद ।। कळा सुं नार हुय आई ।।
दीयो भेद बताय ।। शिष्ट अेसी बिध करिये ।।
अप तत्त सुखराम ।। ताय सुं धरणी धरिये ।। १६ ।।

शिव शक्ति की बांह खींचकर चलने लगा और शक्ति पीछे पीछे आने लगी,शिव ने अटल स्थान पर ठहराकर विष्णु को पास बुलाया,ब्रम्हा,विष्णु के साथ शक्ति को भेजा,आप शिव वही रहा । शक्ति अपनी कला से स्त्री बन गई तब कहा की सृष्टि की रचना इस विधी से करो,जल तत के ऊपर पृथ्वी को ठहरावो । ।।१६।।

गुंज कियो तब आय ।। तत्त को भेव बतायो ।।
शिष्ट करण सब जीव ।। पीव से धरम ले आयो ।।
हम तुम सब इण माय ।। पांच आप न मज होय ।।
जीव करण बिस्तार ।। सगत सुं संग संजोई ।।
लख चोरांसी जात हे ।। जीव अनंता होय ।।
जन सुखिया इण पांच को ।। बप बणायो जोय ।। १७ ।।

तब सबने मिलकर सलाह करी । तत्त का याने सतस्वरुप ब्रम्ह का भेद बताया । सृष्टि में सब जीवों को पैदा करनेका उपाय सतस्वरुप ने धर्मराय को बता दिया । हम तुम सब इसी में है । पांच तत्व अपने में है । जीवों का फैलाव याने विस्तार करने के लिये शक्ति को साथ लेकर यह संसार की रचना का काम किया । चौरासी लाख योनीयों में असंख्य जीव है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की देखो पांच तत्वो से यह शरीर बनाया है । ।।१७।।

बाय लाय गेह हात ।। जीव जब जामण दीया ।।
लख चोरासी बप ।। बाय के सरणे कीया ।।

पांच तत्त प्रकास ।। मांड सब जीव उपावे ।।
बाय तेज अप धरण ।। गिगन से पवन ले आवे ।।
ब्रम्हा कूं सब सूंप घडण ।। हुवाला सब दीया ।।
जन सुखिया सिव सगत ।। बिस्न प्रवाणा कीया ।। १८ ।।

वायु तत्व व तेज तत्व से जीवों को बनाया । चौरासी लाख योनीयों के शरीरो को वायु तत्व याने श्वास के शरण में किया । पांच तत्वो का प्रकाश देकर संसार के सब जीवों को पैदा किया । वायु, तेज,पानी,पृथ्वी व गगन से हवा को लेकर व इन सबको ब्रम्हा को सौंप कर ब्रम्हा को पैदा करनेका काम सौंपा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की शक्ति,ब्रम्हा,विष्णु ने इस बात को स्विकार किया । ।।१८।।

जाहाँ ब्रम्हा निर धार ।। आर टेको नी कोई ।।
सगत स्याम मिल जाण ।। ब्रम्ह जल सगत समोई ।।
मंड ह जळ पर जाण ।। ताय सिर कोरूम बेठा ।।
धरण सेंस सिर होय ।। सेंस कोंरूम पर पेठा ।।
अेसा जतन बणाय ।। ताय पर शिष्ट पसारा ।।
धरम राय सुखराम ।। समज कर बचन बिचारा ।। १९ ।।

जब ब्रम्हा को किसी का आधार व सहारा नही था । शक्ति और श्याम ने इसको जाणा । ब्रम्ह जल में शक्ति समा गई । सारी पृथ्वी जल पर है । जल पर कच्छप बैठा है । पृथ्वी शेषनाग के शरीर पर है और शेष कच्छप पर बैठा है । ऐसा जतन बनाकर उस पर सृष्टि का पसारा किया है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,तब धर्मराय समझकर वचन बोले। ।।१९।।

तीन लोक चवदे भवन ।। किया देव सब ठाम ।।
धरम ब्रम्ह को बेण ले ।। सुध बुध साऱ्या काम ।।
तिरगुण घड प्रगट करी ।। आप सकळ सिरताज ।।
ब्रम्हा संकर बिस्न कूं ।। दिया मंड का राज ।।
तीना ओधा पेरिया ।। फिर सगती प्रवाण ।।
तिरगुण मे सुखराम केहे ।। तीन देव की आण ।। २० ।।

तीन लोक चवदह भवन बनाये व सब देवताओ को जगह की जगह बनाये । धरमराय ने सतस्वरुप ब्रम्ह की आज्ञा के मुजब सुध बुध से सब काम किये । त्रिगुण याने सतोगुण,रजोगुण, तमोगुण को घड कर प्रकट किया । ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को ब्रम्हांड का राज दिया और आप धर्मराय सब के ऊपर रहे । तीनो को शक्ति के बराबर ओधे दिये । तीन गुण सतो,रजो,तमो गुण में तीनो देवताओं की आंण है । ।।२०।।

इतनी उत्पत जाण ।। ब्रम्हा सुं धरम बखाणी ।।

ब्रम्हा कूं अब सूंप ।। धरम बोले सत बाणी ।।
दीया सब ले साज ।। जीव सरणागत कीया ।।
ऊँच नीच का न्याव ।। धरम अपने बस लीया ।।
तीन देव कूं सूंपिया ।। लख चोरासी जीव ।।
जन सुखिया रछ्या करो ।। उलट मिलाओ पीव ।। २१ ।।

धर्मराय ने ब्रम्हा से जगत की उत्पती का बखाण किया । ब्रम्हा को सब सौंप कर धर्मराय सत्य वचन बोला । सब तरह के साधन देकर जीवों को ब्रम्हा की शरण में कर दिये व अच्छे बुरे कर्मो का फल भुगताने का काम धर्मराय ने अपने पास रखा । तीन देव याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को चौरासी लाख योनीयों के जीवो को सौंपकर कहा की इनकी रक्षा करो व इन्हें फिरसे परमात्मा मीला दो । ।।२१।।

ब्रम्हा बेद ऊचार ।। जीव कूं गेल बताई ।।
बिस्न पोख प्रवाण ।। भीड़ पर साय कराई ।।
सिव लिया पण आय ।। जोग का भेव बताया ।।
खंड ब्रहमंड का सुत ।। पिंड के माय दिखाया ।।
सगत कहयो तिण बार ।। जीव सब सीव मिलेगा ।।
जन सुखिया इण पास ।। कयो जीव ज्यूं अेक न रेगा ।। २२ ।।

ब्रम्हा ने चार वेदो का उच्चारण कर जीवो को परमात्मा की प्राप्ती का रास्ता बताया । विष्णु जीवो की पालन करने लगा । कष्ट आने पर सहायता करने लगा । शिव ने अष्टांग योग का साधन बताया जो खंड ब्रम्हंड में है वो ही पिंड में है ऐसी विधी बतायी,शक्ति ने कहा सब जीव ब्रम्ह में मिलेंगे । ।।२२।।

सगत लिया पण आय ।। रूप अेसी बिध कीया ।।
ब्रम्ह गेल चुकलाय ।। जीव अपणे बस लीया ।।
माया बोहो प्रकार ।। पाँच ले बाण बणावे ।।
जे कोई मुरड़र जाय ।। बाण सुं मार गिरावे ।।
पास्याँ बोहो बिध गुंथिया ।। जीव गेहेण के काज ।।
तीन लोक सुखराम कह ।। जहाँ तहाँ माया राज ।। २३ ।।

शक्ति ने अपना स्वरुप इस तरह का बनाया की सब जीवो को अपने वश में कर लिया । जीव ब्रम्ह प्राप्ती का रास्ता भुल गये । शक्ति ने कई तरह की माया रच डाली । शब्द, स्पर्श, रुप, रस,गंध ये पांच बाण शक्ति ने बनाये है, जो जीव ब्रम्ह प्राप्ती के रास्ते जाते है तो शक्ति बाण मार गिराती है । जीवो को अपने वश में करने के लिये कई तरह की फासियां गूंथ डाली । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की,तीन लोक में जहा तहां माया का राज है । ।।२३।।

जीव दिया उळझाय ।। पीव लग जाण न पावे ।।
सगत आप बस कीन ।। निसो दिन नाच नचावे ।।
तीन देव सो माय ।। अलख बिन बचे न कोई ।।
देहे धर उपजे जीव ।। सकळ माया बस होई ।।
सुरपुर नरपुर नागपुर ।। माया किया बणाव ।।
जन सुखिया निरखे सबे ।। हरक हरक ले आव ।। २४ ।।

सब जीवों को माया शक्ति ने ऐसे संसार में उलजाया की कोई भी परमात्मा की प्राप्ती कर नही सकता । सब जीवों को शक्ति ने अपने वश में कर लिया है । रात दिन अपनी इच्छा नुसार नाच नचाती है । तीनो देव ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये भी माया शक्ति के वश में है,निरंजन, निराकार,अलख ब्रम्ह के सिवाय माया से कोई नही बचा,जो भी जीव शरीर धारता है वो सब माया के वश में हो जाता है । देवताओ के लोक में,मनुष्य लोक में व पाताल में सब जगह माया का पसारा है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सब खुशी से माया के वश हो जाते है । ।।२४।।

निराकार नीर------ ।। दूसरे बींभे चलायो ।।
तीजो आसा धार ।। शिष्ट करणे कूं आयो ।।
ओऊँ शब्द उचार ।। सगत सो आद बणाई ।।
इण मिल इंड उपजाय ।। देव तीनुं घड़ माई ।।
जळ बन कर पैदास ।। पुरष सो पाँच उपायो ।।
जन सुखिया ओ मूळ ।। बिस्न ब्रम्हा बिन गायो ।। २५ ।।

तब निरंजन निराकार परमात्मा ने उनकी जो इच्छा थी की सृष्टी की पुन: रचना हो । इसलिये ओऊं शब्द का उच्चारण कर परमात्मा ने शक्ति को बणाया । निराकार ने इंड पैदा किया व इस इंड से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को पैदा किया । जल वनस्पती व पंच तत्व से पुरुष पैदा किये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,यह मुल उत्पती ग्रंथ ब्रम्हा व विष्णु के बिना कहा है । ।।२५।।

मूळ प्राण परतीत ।। अलख हे आद गुसाई ।।
गुर बिन लखे न कोय ।। शाम रमत सब भाई ।।
सत्तगुर बिना आधार ।। निरख नेणा नहि सूझे ।।
भरम रया सब जीव ।। पीव गेलो नहि बूजे ।।
सत्तगुर धर अवतार ।। जीव कूं आण जगावे ।।
उपराड़े की गेल ।। ताय हुय हंस ले आवे ।। २६ ।।

मूल में जो पांच तत्व में जो प्राण प्रतीत हो रहे है वो उस अलख अविनासी का ही अंश है । वही श्याम सब घट में रम रहा है । लेकिन उसको ओधाधारी गुरुदेव के बिना लख नही

सकते । इन नैत्रो से उसको लख नही सकते । सभी जीव माया व ब्रम्ह में उलझे हुये है । परमात्मा में मिलने का रस्ता नही सुझता । उसके लिये परमात्मा ऐसे ओधाधारी सतगुरु को भेजते है तो जीवों को ज्ञान के द्वारा जगाते है । खंड,पिंड,ब्रम्हंड का छेदन करा कर के हंसो को परमात्मा में मिला देते है । ।।२६।।

मूळ प्राण अेतो कयो ।। सुणो सकळ चित्त लाय ।।
भिंन भिंन अरथ बिचार कर ।। साच गहो जन आय ।।
जांथे उत्पत ऊपनी ।। सो करतार बखाण ।।
उली देखा भूल मे ।। जाहाँ ताहाँ खाचा तांण ।।
पूरण पुरा गुर मिले ।। मूल केहे सब आय ।।
जन सुखिया तब जीव का ।। भरम करम सब जाय ।। २७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मैंने मूल प्राण उत्पती ग्रंथ कहा है,उसको सब चित लगाकर सुनो,इस ग्रंथ में भिन्न भिन्न अरथ का विचार करो । भक्ति करने वाले जन सत्य को धारण करो । जिसने इस जगत को रचा है वो सृष्टी करता है । ब्रम्हा,विष्णु,महादेव व अवतारो क भक्ति में लगकर सतस्वरुप ब्रम्ह प्राप्ती के ज्ञान को भुल रहे है । इसमें जहां तहां वाद विवाद है । परमपद की प्राप्ती किये हुये पुर्ण सतगुरु के मिलने पर ही मूल प्राण उत्पती का सब बखाण करते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जब ही जीव के सब भरमो करमो का नाश होता है । ।।२७।।

ब्रम्हा की उत्पत उरे ।। इतनी परे बखाण ।।
अे बंधन पेली बाध ।। जव प्रगट प्रवाण ।।
ब्रम्हा सुं कासब भयो ।। चवदे नार बियाय ।।
च्यार खान प्रगट करी ।। सकळ जीव जग माय ।।
सकळ जीव जुग माय ।। राज ब्रम्हा को कर हे ।।
कृत जुग मध सुखराम ।। नाम बरण नहि धर हे ।। २८ ।।

जिस रीत से ब्रम्हा का शरीर बना इसी रीत से पंच तत्व व तीन गुण से सारी सृष्टी बनी । ब्रम्हा से कश्यप हुआ,जिनके चौदह स्त्रिया हुई । उन्होंने चार खान मे जगत के जीवो को बांधा । मूल मे यह सभी उसी परमात्मा के हुक्म का पालन कर रहे है । उस परमात्माका कोई नाम,वर्ण व रुप नही है । ।।२८।।

।। इति मुळ प्राण उत्पत ग्रंथ को अंग संपूरण ।।